इंडियन नैवल सेलिंग वेसेल एम.एच.ए.डी.ई.आई. के 22 मई, 2010 को मुम्बई में आगमन के अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

भारत निर्मित पाल-नौका (यॉट) में किसी भारतीय द्वारा जलमार्ग से पहली बार विश्व की परिक्रमा पूरा करने वाले कमांडर दिलीप डोंडे को देखने के इस यादगार मौके पर आज यहां उपस्थित होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। कमांडर डोंडे की उपलब्धि साहस, दृढ़ संकल्प और कौशल के प्रदर्शन की मिसाल है। वह विश्वभर के लगभग 300 व्यक्तियों के उस चुनींदा समूह में शामिल हो गए हैं जिन्होंने यह उपलब्धि हासिल की है। वह हमारे युवाओं और नागरिकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गए हैं। राष्ट्र उनकी मां श्रीमती मीरा डोंडे और उनके परिवार के अन्य सदस्यों के साथ-साथ स्वयं को गौरवन्वित महसूस कर रहा है।

यह उपलब्धि हमारे विशिष्ट नौसैनिक इतिहास को परिलक्षित करती है और शांति, सद्भाव तथा मित्रता के संदेशों के साथ समुद्रों के आर-पार मित्रता की कड़ी जोड़ने की हमारी नौसेना की अभिरूचि के पुनरूत्थान को दर्शाती है। यह एक तरह से इस बात की स्वीकृति भी है कि भारतीय नौसेना ने सभी विद्यमान बहुआयामी जटिलताओं के साथ परिनौवहन के संबंध में योजना बनाने और उसके पर्यवेक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निबाही है। राष्ट्र हमारी समुद्री सीमाओं की रक्षा में लगी भारतीय नौसेना की महत्वपूर्ण भूमिका और अन्तर्राष्ट्रीय पोत-परिवहन मार्गों, जो हमारी अर्थव्यवस्था की बेहतरी के लिए महत्वपूर्ण हैं, की निगरानी की सराहना करता है।

भारतीय नौसेना ने युवाओं में साहस की भावना का प्रसार भी किया है। इसके कार्मिक उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव पर पहुंच चुके हैं, माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई कर चुके हैं और आज उन्होंने जलमार्ग से विश्व की परिक्रमा भी कर ली है।

भविष्य में ऐसी अनेकानेक उपलब्धियों के लिए मेरी तथा राष्ट्र की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद।